ओलंपिक में लिंग पहचान के नए नियम

ओलंपिक खेल शुरू हैं और एक बार फिर यह बात उठ रही है कि बहुत अच्छा प्रदर्शन करने वाली महिला एथलीट्स की लिंग जांच की जाएगी। वैसे ओलंपिक समिति ने कहा है कि वह लिंग जांच नहीं करेगी मगर जो नियम बनाए गए हैं वे लिंग जांच का ही एक रूप हैं। और तो और, कई विशेषज्ञों का मत है कि ये भेदभावपूर्ण हैं।

पूरे मामले की शुरुआत 2009 में हुई थी जब अफ्रीकी धावक केस्टर सेमेन्या ने 800 मीटर दौड़ जीती थी। सेमेन्या की ज़बर्दस्त जीत और शारीरिक गठन के चलते अन्य प्रतिस्पर्धियों ने उसके लिंग को लेकर सवाल खड़े किए थे। सेमेन्या को अपमान से बचने के लिए छिपकर रहना पड़ा था। उस समय भी अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक फेडरेशन की लिंग जांच नीति पर विवाद हुआ था।

खेलकूद के दौरान तरीका यह होता है कि अच्छा प्रदर्शन करने वाली महिलाओं के खून में टेस्टोस्टेरोन नाम हारमोन की जांच की जाती है। यदि इसकी मात्रा एक सीमा से अधिक पाई जाए, तो उसे आगे जांच करवाना होता है। इसके पीछे मान्यता यह है कि टेस्टोस्टेरोन एक पुरुष हारमोन है और यह मज़बूत मांसपेशियां और स्टेमिना को बढ़ाने में मददगार होता है।

वैसे विशेषज्ञों के मुताबिक यह मान्यता निराधार है। कुछ महिलाओं में जो 'असाधारण' क्षमता नज़र आती है वह सिर्फ टेस्टोस्टेरोन का परिणाम नहीं होती। सबसे बड़ी बात तो यह है कि अधिक टेस्टोस्टेरोन वाली जितनी महिला एथलीट्स का परीक्षण किया गया है उनमें से अधिकांश तो टेस्टोस्टेरोन के प्रति असंवेदी पाई गई हैं। अर्थात उनके शरीर की कोशिकाएं इस टेस्टोस्टेरोन की उपस्थिति का संज्ञान ही नहीं लेतीं। तो उन्हें इससे फायदा होने की गुंजाइश ही नहीं है।

ओलंपिक समिति ने कहा है कि वह इस मर्तबा लिंग जांच नहीं करेगी बल्कि सिर्फ यह परखने की कोशिश करेगी कि कौन-सी महिला एथलीट्स 'अति-पुरुषनुमा' हैं। इस आधार पर ही तय किया जाएगा कि उन्हें महिलाओं के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने दिया जाए अथवा नहीं।

विशेषज्ञों का मत है कि यह नियम भेदभावपूर्ण है। सभी जानते हैं कि अच्छे एथलीट्स कई खूबियों के धनी होते हैं। जैसे कुछ एथलीट्स में ऐसे जिनेटिक गुण होते हैं कि उनकी फेफड़ों की शक्ति और हवा में से ऑक्सीजन प्राप्त करने व उसका उपयोग करने की शक्ति अधिक होती है। इसी प्रकार से कई एथलीट्स की मांसपेशियां मज़बूत होना उनका कुदरती गुण होता है।

इसी प्रकार से कुछ बास्केट बॉल खिलाड़ियों में एक जिनेटिक म्यूटेशन पाया जाता है जो एक्रोमेगेली पैदा करता है जिसमें व्यक्ति के पंजे और पैर बड़े हो जाते हैं। तो, यदि किसी महिला में कुदरती तौर पर अतिरिक्त टेस्टोस्टेरोन का निर्माण होता है, तो इसे एक ऐसा गुण क्यों माना जाए जिसके आधार पर उन्हें प्रतियोगिता से बाहर किया जाए?

(स्रोत फीचर्स)